डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिंदी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

पत्र : अष्टम : साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना

दिनांक : 13.07.2020

विचार विषय :—
काव्य-हेतु

आचार्यों के मत

संस्कृत काव्यशास्त्र में आचार्यों ने स्थिति और परिवेश के अनुसार 'काव्य-हेतु' को कई प्रकार से परिभाषित किया है।

01. आचार्य भामह :- आचार्य भामह ने काव्य हेतु को परिभाषित करते हुए अपने ग्रंथ काव्यालंकार में कहते हैं—

"गुरूपदेशादध्येतुं शास्त्रं जडधियोऽप्यलम् ।
काव्यं तु जायते जातु कस्यचित् प्रतिभावतः ॥" (-1-14)

अर्थात्, गुरु के उपदेश से मूर्ख के लिए भी शास्त्र अध्ययन करने के लिए सुलभ हो जाता है या उतना ही पर्याप्त होता है। लेकिन काव्य सृजन तो किसी प्रतिभावान की प्रतिभा से ही उत्पन्न होता है। बिना प्रतिभा के कोई भी काव्य-रचना में समर्थ नहीं हो सकता है। अर्थात् वे काव्य के प्रथम स्वरूप को ही काव्य का मूल मानते हैं। लेकिन इसके साथ-साथ भामह ने प्रतिभा के परिष्कार और पोषण के लिए काव्य रचना के पहले कवि को विधिवत शब्द और अर्थ का निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इसके साथ ही श्रेष्ठ कवियों के रचनाओं का भी भली-भाँति अनुशीलन करना चाहिए।

02. आचार्य दण्डी :- आचार्य दण्डी ने अपने ग्रंथ 'काव्यादर्श' में काव्य-हेतु पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं—

"नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहुनिर्मलम् ।
अमन्दश्चाभियोगोऽस्याः कारणं काव्यसंपदः ॥"

अर्थात् काव्य सम्पदा के कारणों में नैसर्गिक प्रतिभा, शास्त्रों के सुनने फलस्वरूप प्राप्त निर्मल बुद्धि और निरंतर तीव्र अभ्यास आते हैं। वे कहते हैं कि प्रतिभा के साथ-साथ अभ्यास और निर्मल (शुद्ध) बुद्धि भी आवश्यक है। अगर कवि की बुद्धि शुद्ध नहीं है तो

उसके द्वारा लिखित काव्य अपने मूल उद्देश्य से भटककर समाज को लाभ के जगह वैचारिक हानि पहुँचा सकती है। साथ ही अभ्यास के कारण शीघ्र ही उत्तम कोटि के काव्य सृजन का सामर्थ्य कवि को प्राप्त हो जाता है।

03. आचार्य वामन :- आचार्य वामन ने अपने ग्रंथ 'काव्यालंकारसूत्रवृत्ति' में काव्य-हेतु के लिए लोक, विद्या तथा प्रकीर्ण को काव्य-निर्माण की क्षमता प्राप्त करने के तीन अंग माने हैं।

'लोक विद्या प्रकीर्णं च काव्यांगानि।" (काव्यालंकारसूत्रवृत्ति, 1/3/1)

साथ ही प्रतिभा को जन्मजात गुण मानते हुए इसे प्रमुख काव्य हेतु स्वीकार किया है —

'कवित्व बीजं प्रतिभानं कवित्वस्य बीजम्।"

प्रतिभा के अतिरिक्त वे लोक व्यवहार, शास्त्रज्ञान, शब्दकोश आदि की जानकारी को भी काव्य हेतुओं में स्थान देते हैं. ध्यातव्य है कि काव्यांग में वामन ने लोक तथा विद्या के पश्चात् ही प्रतिभा को महत्व दिया है.